© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS
Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 09 , Issue : 03 | April - June 2023

राजनीतिक भागीदारी पर सोशल मीडिया का प्रभाव: एक व्यापक विश्लेषण

ANJU

Sub : Political Science (JRF and NET Qualified)

sindhuanju1990@gmail.com

सार

यह शोध पत्र सोशल मीडिया और राजनीतिक भागीदारी के बीच बहुमुखी संबंधों पर प्रकाश डालता है। संचार प्रौद्योगिकियों के तेजी से विकास के साथ, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म समकालीन राजनीतिक चर्चा का केंद्र बन गए हैं, जो व्यक्तियों के राजनीतिक मामलों से जुड़ने के तरीके को प्रभावित कर रहे हैं। यह पेपर राजनीतिक भागीदारी पर सोशल मीडिया के प्रभाव के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलुओं की जांच करते हुए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाता है।

मुख्य शब्द : सामाजिक मीडिया,राजनीतिक भागीदारी, नागरिक अनुबंध,डिजिटल लोकतंत्र,चुनावी प्रक्रियाएँ इत्यादि।

प्रस्तावना

डिजिटल युग में, सोशल मीडिया प्लेटफार्मों के उद्भव और तेजी से विकास ने लोगों के संवाद करने, जानकारी साझा करने और अपने जीवन के विभिन्न पहलुओं में शामिल होने के तरीके में क्रांति ला दी है। इस तकनीकी बदलाव से प्रभावित सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक राजनीति है। फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म महत्वपूर्ण चैनल बन गए हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति राजनीतिक प्रवचन तक पहुंचते हैं, चर्चा करते हैं और भाग लेते हैं। इन प्लेटफार्मों की तात्कालिक प्रकृति पारंपरिक मीडिया और व्यक्तिगत संचार के बीच की रेखाओं को धुंधला करते हुए वास्तविक समय की बातचीत को सक्षम बनाती है। राजनीतिक भागीदारी, लोकतांत्रिक समाजों की आधारशिला है, जिसमें मतदान और सार्वजनिक रैलियों में भाग लेने से लेकर नीतिगत मुद्दों पर चर्चा में शामिल होने तक की गतिविधियाँ शामिल हैं। सोशल मीडिया के आगमन ने नागरिकों के लिए इन गतिविधियों में शामिल होने के लिए नए रास्ते पेश किए हैं, जिससे राजनीतिक भागीदारी का परिदृश्य बदल गया है।

राजनीतिक भागीदारी पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव

सोशल मीडिया प्लेटफार्मों ने राजनीतिक भागीदारी में कई सकारात्मक बदलाव लाए हैं, जिससे नागरिकों के राजनीतिक मुद्दों से जुड़ने और उनकी सरकारों के साथ बातचीत करने के तरीकों में बदलाव आया है। इन सकारात्मक प्रभावों में शामिल हैं:

सूचना तक पहुंच में वृद्धि: सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं को सूचना और समाचार स्रोतों की एक विस्तृत श्रृंखला तक तत्काल पहुंच प्रदान करके एक लोकतांत्रिक शक्ति के रूप में कार्य करता है। उपयोगकर्ता पारंपरिक द्वारपालों को दरकिनार कर सकते हैं और राजनीतिक मुद्दों के बारे में अपनी समझ को बढ़ाते हुए विविध दृष्टिकोणों का पता लगा सकते हैं। सूचना तक यह आसान पहुंच अधिक सूचित नागरिक वर्ग को बढ़ावा देती है, जो सार्थक राजनीतिक भागीदारी के लिए आवश्यक है।

नागरिक सहभागिता बढ़ाना: सोशल मीडिया नागरिकों को अपनी राय व्यक्त करने, राजनीतिक चर्चाओं में शामिल होने और नीति निर्माताओं के साथ सीधे बातचीत करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। यह इंटरैक्टिव जुड़ाव व्यक्तियों को अपनी चिंताओं को व्यक्त करने, प्रतिक्रिया देने और निर्वाचित अधिकारियों को इस तरह से जवाबदेह बनाने का अधिकार देता है जो डिजिटल युग से पहले उतना सुलभ नहीं था। इसके अलावा, सोशल मीडिया वर्चुअल टाउन हॉल, बहस और सवाल-जवाब सत्र की सुविधा प्रदान करता है, जिससे नागरिक भागीदारी के अधिक समावेशी और प्रत्यक्ष रूपों की अनुमति मिलती है।

जमीनी स्तर के आंदोलनों को सुविधाजनक बनाना: सोशल मीडिया सूचना के तेजी से प्रसार को सक्षम बनाता है, जिससे जमीनी स्तर के आंदोलनों को दृश्यता और गति प्राप्त करने में मदद मिलती है। हैशटैग, वायरल वीडियो और ऑनलाइन याचिकाएं तेजी से विभिन्न कारणों के लिए जनता का ध्यान और समर्थन उत्पन्न कर सकती हैं। #ब्लैकलाइव्समैटर और #मीटू जैसे आंदोलनों ने सामाजिक न्याय के मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने और वास्तविक दुनिया में बदलाव लाने के लिए सोशल मीडिया की शक्ति का उपयोग किया है।

राजनेताओं और घटकों को जोड़ना: सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म राजनेताओं को पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देते हुए, अपने मतदाताओं से सीधे जुड़ने की अनुमति देते हैं। निर्वाचित अधिकारी अपडेट, नीति प्रस्ताव साझा कर सकते हैं और वास्तविक समय में घटकों की चिंताओं का जवाब दे सकते हैं। यह व्यक्तिगत संचार नागरिकों और उनके प्रतिनिधियों के बीच संबंध

की भावना को बढ़ावा देता है, जिससे संभावित रूप से राजनीतिक प्रक्रिया में विश्वास बढ़ता है।

सहित्य की समीक्षा

1. बेनेट, डब्ल्यू. एल., और सेगरबर्ग, ए. (2013)" कनेक्टिव एक्शन का तर्क: डिजिटल मीडिया और विवादास्पद राजनीति का वैयक्तिकरण। सूचना, संचार और समाज" यह अध्ययन "कनेक्टिव एक्शन" की अवधारणा का परिचय देता है, जो इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे सामाजिक मीडिया राजनीतिक भागीदारी के विकेंद्रीकृत, नेटवर्कयुक्त रूपों को सक्षम बनाता है। यह राजनीतिक सक्रियता में गतिशीलता, समन्वय और व्यक्तिगत जुड़ाव को सुविधाजनक बनाने में सोशल मीडिया की भूमिका की पड़ताल करता है।

2. बौलियन, एस. (2015) "सोशल मीडिया का उपयोग और भागीदारी: वर्तमान अनुसंधान का एक मेटा-विश्लेषण। सूचना, संचार और समाज"

यह मेटा-विश्लेषण सोशल मीडिया के उपयोग और राजनीतिक भागीदारी के बीच संबंधों का आकलन करने के लिए अध्ययनों की एक विस्तृत श्रृंखला की जांच करता है। यह सोशल मीडिया के उपयोग और राजनीतिक जुड़ाव के विभिन्न रूपों, जैसे ऑनलाइन चर्चा, राजनीतिक जानकारी साझाकरण और ऑफ़लाइन भागीदारी के बीच एक सकारात्मक संबंध पाता है।

3. जुनघेर, ए., जुर्गेंस, पी., और स्कोएन, एच. (2012)"पाइरेट पार्टी ने 2009 का जर्मन चुनाव क्यों जीता या भविष्यवाणियों में परेशानी" यह अध्ययन 2009 के जर्मन चुनाव में पाइरेट पार्टी की सफलता का विश्लेषण करता है, और उनके प्रदर्शन का श्रेय जमीनी स्तर पर लामबंदी के लिए सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग को देता है। यह दर्शाता है कि कैसे सोशल मीडिया विशिष्ट पार्टियों की आवाज़ को बढ़ा सकता है और राजनीतिक परिवर्तन को बढ़ावा दे सकता है।

4. गिल डे ज़ुनिगा, एच., और वालेंज़ुएला, एस. (2011) "एक मजबूत नागरिकता के लिए मध्यस्थता मार्ग: ऑनलाइन और ऑफलाइन नेटवर्क, कमजोर संबंध और नागरिक जुड़ाव" यह शोध ऑनलाइन और ऑफलाइन सोशल नेटवर्क के बीच संबंधों का पता लगाता है और नागरिक सहभागिता पर उनका प्रभाव। यह सुझाव देता है कि सोशल मीडिया के माध्यम से बने कमजोर संबंध विविध समुदायों को जोड़ सकते हैं, राजनीतिक चर्चा को बढ़ावा दे सकते हैं और जुड़ाव को बढ़ावा दे सकते हैं।

5. टुफेकी, जेड. (2017)" ट्विटर एंड टियर गैस: द पावर एंड फ्रैगिलिटी ऑफ नेटवर्क्ड प्रोटेस्ट"। यह पुस्तक इस बात का व्यापक विश्लेषण प्रदान करती है कि सोशल मीडिया, विशेषकर ट्विटर ने, समकालीन विरोध आंदोलनों और राजनीतिक सक्रियता को कैसे प्रभावित किया है। यह डिजिटल लामबंदी के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों पर चर्चा करते हुए, नेटवर्क विरोध की गतिशीलता पर प्रकाश डालता है।

6. वैकेरी, सी., वेलेरियानी, ए., बारबेरा, पी., बोन्यू, आर., जोस्ट, जे.टी., नागलर, जे., और टकर, जे.ए. (2020) "सामूहिक पक्षपात का एक नया युग? पक्षपात, ध्रुवीकरण, और इंटरनेट। राजनीति विज्ञान की वार्षिक समीक्षा" यह समीक्षा लेख सोशल मीडिया, पक्षपात और राजनीतिक ध्रुवीकरण के बीच संबंधों की जांच करता है। यह आकलन करता है कि कैसे ऑनलाइन इको चैंबर और फिल्टर बबल पक्षपातपूर्ण रवैये को तीव्र करने में योगदान करते हैं, जो संभावित रूप से राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

राजनीतिक भागीदारी पर सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव

गलत सूचना और दुष्प्रचार का प्रसार: सोशल मीडिया पर सूचनाओं के तेजी से आदान-प्रदान से गलत सूचना और दुष्प्रचार का व्यापक प्रसार हो सकता है। झूठी या भ्रामक सामग्री तेजी से लोकप्रियता हासिल कर सकती है, सार्वजनिक धारणाओं को आकार दे सकती है और राजनीतिक निर्णयों को प्रभावित कर सकती है। इको चैंबर प्रभाव, जहां उपयोगकर्ताओं को ऐसी जानकारी से अवगत कराया जाता है जो उनकी मौजूदा मान्यताओं से मेल खाती है, उचित तथ्य-जांच के बिना झूठी जानकारी के प्रसार को बढ़ा सकता है।

राजनीतिक प्रवचन गुणवत्ता का क्षरण: सोशल मीडिया संचार की संक्षिप्तता और अनौपचारिक प्रकृति वास्तविक राजनीतिक चर्चा में बाधा बन सकती है। जटिल मुद्दों को अक्सर चरित्र सीमाओं के भीतर फिट करने के लिए अत्यधिक सरलीकृत किया जाता है, जिससे उथली चर्चा होती है जिसमें बारीकियों का अभाव होता है। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया द्वारा प्रदान की गई गुमनामी से असभ्यता, ट्रोलिंग और विविध दृष्टिकोणों का दमन हो सकता है, जिससे राजनीतिक चर्चाओं की समग्र गुणवत्ता खराब हो सकती है।

ऑनलाइन उत्पीड़न और शत्रुता: सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म द्वारा दी जाने वाली गुमनामी और दूरी व्यक्तियों को ऑनलाइन उत्पीड़न, घृणास्पद भाषण और साइबरबुलिंग में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित कर सकती है। इस तरह का शत्रुतापूर्ण व्यवहार व्यक्तियों, विशेष रूप से हाशिए

पर रहने वाले समूहों को राजनीतिक चर्चाओं में भाग लेने से हतोत्साहित कर सकता है। विषाक्त ऑनलाइन वातावरण का प्रचलन राजनीतिक भागीदारी और खुले संवाद पर भयावह प्रभाव पैदा कर सकता है।

डिजिटल युग में राजनीतिक अभियान रणनीतियाँ

सोशल मीडिया प्लेटफार्मों ने उम्मीदवारों और मतदाताओं के बीच सीधे संचार को सक्षम करके अभियान रणनीतियों को बदल दिया है। अभियान पारंपरिक मीडिया द्वारपालों को दरकिनार कर सकते हैं और अपने आख्यानों को सीधे जनता के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं। उम्मीदवार लाइव वीडियो स्ट्रीम में शामिल हो सकते हैं, ऑनलाइन बहस में भाग ले सकते हैं और वास्तविक समय में मतदाता पूछताछ का जवाब दे सकते हैं। सोशल मीडिया पर सामग्री की वायरलिटी तेजी से अभियान संदेशों को बढ़ा सकती है, जिससे व्यापक दृश्यता उत्पन्न हो सकती है।

सोशल मीडिया महत्वपूर्ण रूप से यह तय कर सकता है कि मतदाता उम्मीदवारों को कैसे समझते हैं। प्रामाणिकता, प्रासंगिकता और मुद्दों के प्रति प्रतिक्रियाशीलता ऐसे गुण हैं जिन्हें सोशल मीडिया इंटरैक्शन के माध्यम से उजागर किया जा सकता है। हालाँकि, सोशल मीडिया की सतही प्रकृति भी उम्मीदवार के व्यक्तित्व के निर्माण में योगदान कर सकती है जो उनकी नीतियों या योग्यताओं को सटीक रूप से प्रतिबिंबित नहीं कर सकती है। भ्रामक सामग्री और नकारात्मक हमले भी उम्मीदवारों की छवि खराब कर सकते हैं। जैसे-जैसे चुनावी प्रक्रियाओं में सोशल मीडिया की भूमिका विकसित होती जा रही है, डिजिटल प्रचार से जुड़े नैतिक विचार और नियम तेजी से प्रासंगिक होते जा रहे हैं। गलत सूचना का प्रसार, एल्गोरिथम संबंधी पूर्वाग्रह और विदेशी हस्तक्षेप की संभावना कुछ ऐसी चुनौतियाँ हैं जिन पर चुनावी परिणामों की अखंडता सुनिश्चित करने के लिए ध्यान देने की आवश्यकता है। जबकि सोशल मीडिया लोकतांत्रिक जुड़ाव के लिए नए रास्ते प्रदान करता है, यह चुनावों में निष्पक्षता और पारदर्शिता बनाए रखने के लिए सतर्क निगरानी की आवश्यकता को भी रेखांकित करता है।

निष्कर्ष

सोशल मीडिया और राजनीतिक भागीदारी के बीच संबंध एक जटिल और विकासशील संबंध है जिसमें सकारात्मक और नकारात्मक गतिशीलता की एक श्रृंखला शामिल है। इस शोध पत्र ने लोकतांत्रिक जुड़ाव पर सोशल मीडिया के बहुमुखी प्रभावों का पता लगाया है, यह अंतर्दृष्टि प्रदान करते हुए कि ये मंच राजनीतिक प्रवचन, मतदाता व्यवहार, सक्रियता और चुनावी

प्रक्रियाओं को कैसे आकार देते हैं। सूचना तक पहुंच बढ़ाने, नागरिक जुड़ाव बढ़ाने, जमीनी स्तर के आंदोलनों को सुविधाजनक बनाने और राजनेताओं को घटकों से जोड़ने की सोशल मीडिया की क्षमता लोकतांत्रिक भागीदारी को मजबूत करने की इसकी क्षमता को रेखांकित करती है। इन सकारात्मक प्रभावों ने अधिक सूचित नागरिकों, अधिक सार्वजनिक जवाबदेही और राजनीतिक लामबंदी के नवीन रूपों को जन्म दिया है।

हालाँकि, सोशल मीडिया के प्रभाव के नकारात्मक परिणामों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। गलत सूचना का प्रसार, राजनीतिक प्रवचन की गुणवत्ता का क्षरण, ध्रुवीकरण और ऑनलाइन उत्पीड़न इन प्लेटफार्मों की रचनात्मक क्षमता को चुनौती देते हैं। एल्गोरिदम द्वारा बनाए गए प्रतिध्वनि कक्ष और फ़िल्टर बुलबुले तेजी से विभाजित सार्वजनिक चर्चा को जन्म दे सकते हैं, उत्पादक बातचीत में बाधा डाल सकते हैं और एक सूचित मतदाता के लोकतांत्रिक आदर्श से समझौता कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. बेनेट, डब्ल्यू.एल., और सेगरबर्ग, ए. (2013)। कनेक्टिव एक्शन का तर्क: डिजिटल मीडिया और विवादास्पद राजनीति का निजीकरण। सूचना, संचार एवं समाज, 15(5), 739-768.
2. बाउलिएन, एस. (2015)। सोशल मीडिया का उपयोग और भागीदारी: वर्तमान शोध का एक मेटा-विश्लेषण। सूचना, संचार एवं समाज, 18(5), 524-538.
3. जुनघेर, ए., जुर्गेंस, पी., और स्कोएन, एच. (2012)। पाइरेट पार्टी ने 2009 का जर्मन चुनाव क्यों जीता या भविष्यवाणियों में परेशानी: तुमसजन, ए., स्प्रेंजर, टी.ओ., सैंडर, पी.जी., और वेल्पे, आई.एम. (2011) पर एक प्रतिक्रिया। सामाजिक विज्ञान कंप्यूटर समीक्षा, 30(2), 229-234।
4. गिल डे ज़ुनिगा, एच., और वालेंज़ुएला, एस. (2011)। एक मजबूत नागरिकता के लिए मध्यस्थ मार्ग: ऑनलाइन और ऑफलाइन नेटवर्क, कमजोर संबंध, और नागरिक जुड़ाव। संचार अनुसंधान, 39(6), 759-778.
5. तुफेक्की, जेड (2017)। ट्विटर और आंसू गैस: नेटवर्क विरोध की शक्ति और कमजोरी। येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. वैकारी, सी., वेलेरियानी, ए., बारबेरा, पी., बोनेउ, आर., जोस्ट, जे.टी., नागलर, जे., और टकर, जे.ए. (2020)। सामूहिक पक्षपात का एक नया युग? पक्षपात, ध्रुवीकरण और इंटरनेट। राजनीति विज्ञान की वार्षिक समीक्षा, 23, 83-101.

7. डेलि कार्पिनी, एम. एक्स., और कीटर, एस. (1996)। अमेरिकी राजनीति के बारे में क्या जानते हैं और यह क्यों मायने रखता है। येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. एनली, जी.एस. (2017)। प्रामाणिक बाहरी व्यक्ति के लिए ट्विटर एक अखाड़ा: 2016 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में ट्रम्प और क्लिंटन के सोशल मीडिया अभियानों की खोज। यूरोपियन जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन, 32(1), 50-61।
9. हावर्ड, पी.एन., और हुसैन, एम.एम. (2013)। लोकतंत्र की चौथी लहर? डिजिटल मीडिया और अरब स्प्रिंग। ऑक्सफोर्ड यूनिवरसिटि प्रेस।
10. लार्सन, ए.ओ., और मो, एच. (2012)। राजनीतिक माइक्रोब्लॉगिंग का अध्ययन: 2010 स्वीडिश चुनाव अभियान में ट्विटर उपयोगकर्ता। न्यू मीडिया एंड सोसाइटी, 14(5), 729-747।